SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पत्रकारिता के सरोवर में हंस

कीर्ति बाजपेई, (Ph.D.), हिंदी विभाग
माता गुजरी महिला महाविद्यालय (स्वशासी), जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत
पिंकी सिन्हा, हिंदी विभाग
होली क्रॉस वीमेंस कॉलेज, अंबिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
कीर्ति बाजपेई, (Ph.D.), हिंदी विभाग
माता गुजरी महिला महाविद्यालय (स्वशासी), जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत
पिंकी सिन्हा, हिंदी विभाग
होली क्रॉस वीमेंस कॉलेज, अंबिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 12/07/2021
Plagiarism : 00% on 05/07/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

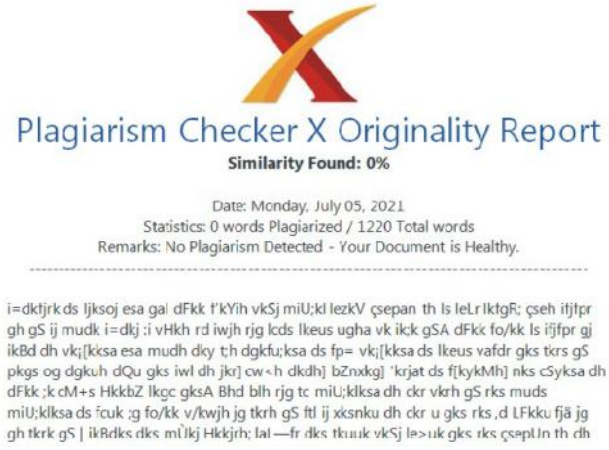

Date: Monday, July 05, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 1220 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

i=dktjrk ds ljksoj esa gal dFkk f'kYih vkSj miU;kl lezkV çsepan th ls leLr lkfgR; çseh ifjfpr gh gS ij mudk i=dkj :i vHkh rd iwjh rjg lcds lkeus ugha vk ik;k gSA dFkk fo/kk ls ifjfpr gj ikBd dh vk;[kksa esa mudh dky t;h dgkfu;ksa ds fp= vk;[kksa ds lkeus vafdr gks tkrs gS pkgs og dgkuh dQu gks iwl dh jkr] cw<h dkdh] bZnxkg] 'krjat ds f[kykMh] nks cSyksa dh dFkk ;k cM+s HkkbZ lkgc gksA Bhd blh rjg tc miU;klksa dh ckr vkrh gS rks muds miU;klksa ds fcuk ;g fo/kk v/kwjh jg tkrh gS ftl ij xksnku dh ckr u gks rks ,d LFkku fjä jg gh tkrk gS | ikBdks dks mÙkj Hkkjrh; laL—fr dks tkuuk vkSj le>uk gks rks çsepUn th dh

शोध सार

कथा शिल्पी और उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी से समस्त साहित्य प्रेमी परिचित ही है पर उनका पत्रकार रूप अभी तक पूरी तरह सबके सामने नहीं आ पाया है। कथा विधा से परिचित हर पाठक की आँखों में उनकी कालजयी कहानियों के चित्र आँखों के सामने अंकित हो जाते है, चाहे वह कहानी कफन हो, पूस की रात, बूढी काकी, ईदगाह, शतरंज के खिलाडी, दो बैलों की कथा या बड़े भाई साहब हो। ठीक इसी तरह जब उपन्यासों की बात आती है तो उनके उपन्यासों के बिना यह विधा अधूरी रह जाती है जिस पर गोदान की बात न हो, तो एक स्थान रिक्त रह ही जाता है। पाठको को उत्तर भारतीय संस्कृति को जानना और समझना हो तो प्रेमचन्द जी की समस्त विधाओं का को पढना ही अपने आप में पूरी संस्कृति का दर्शन करा देता है।

मुख्य शब्द

शिल्पी, विधा, अपरिहार्य, बौद्धिक, मुक्ता, कोपभाजन.

पत्रकारिता एक सशक्त माध्यम है, जिसे अपनाकर जन मानस से सीधे जुडा जा सकता है। किसी भी क्षेत्र के जन जागरण और बौद्धिक क्रांति के लिए पत्रकारिता एक अपरिहार्य साधन रहा है। हिंदी साहित्य के लगभग सभी प्रसिद्ध साहित्यकार पत्रकार की भूमिका निभाते कभी न कभी नजर आते रहे हैं।

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में एक पत्रकार के रूप में प्रेमचंद और एक पत्रिका के रूप में हंस का स्थान सर्वोपरि है। "प्रेमचन्द एक युग हैं, भूगोल हैं, मनोविज्ञान हैं, इतिहास हैं।" निरंतर गतिमान रहना ही उनका धर्म था। उन्होंने पत्रकारिता के महत्त्व को समझा और उससे जुड़े। प्रेमचन्द ने कहा था: "मैं बहुत शुभ मुहूर्त में हंस

(पत्रिका) का प्रकाशन कर रहा हूँ। रणभेरी बज रही है। 10 मार्च 1930 को हंस पत्रकारिता के क्षीर सागर में मुक्तक चुगने निकल पड़ा। प्रथम अंक के सम्पादकीय में आपने लिखाः "हंस भी मानसरोवर की शांति छोड़कर अपनी नन्ही सी चोंच में चुटकी भर मिटटी लिए हुए समुद्र पाटने, आजादी की जंग में योगदान देने चला है।.....साहित्य और समाज में वह उन गुणों का परिचय करा ही देगा ,जो परम्परा ने उसे प्रदान किये हैं। 3 जून 1932 को बनारसी दास को उन्होंने पत्र में लिखा : "मेरी आकांक्षा बहुत ज्यादा नहीं है खाने भर को मिल जाता है। मुझे दौलत शोहरत नहीं चाहिए, पर मेरे भीतर मोटर बम है। मैं तीन चार श्रेष्ठ पुस्तकें लिख सकूं जो आजादी के काम आ सके। मेरा मानस का हंस अपनी चोंच में आजादी के संघर्ष की मिट्टी लेकर अपना योगदान कर रहा है।"

प्रेमचन्द अपने अध्यापकीय कार्यकाल से ही साहित्य साधना और पत्रकारिता का कार्य आरम्भ कर दिया था। 1905 में जमाना पत्र में भेजे लेख से उन्होंने पत्रकारिता की शुरुआत की थी। जमाना उर्दू पत्र था, इसके बाद उन्होंने हिंदी पत्रकारिता की ओर रुख किया और माधुरी एव हंस का सम्पादन किया। 1930 में वह माधुरी का सम्पादन कार्य करते थे लेकिन माधुरी पत्रिका में वे विषय नहीं थे, जिससे वह हिंदी की राष्ट्रीय पत्रिका बन सके। प्रेमचन्द के मन में ये विचार बार–बार आते रहे, उन्हें एक ऐसी पत्रिका की जरूरत महसूस हुई जो राष्ट्रवादी आन्दोलनों के विचारों का प्रतिनिधित्व कर सके तथा जनमत का निर्माण हो सके। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान ही 1930 में हंस का प्रकाशन उनके सम्पादन में प्रारम्भ हुआ। इसका प्रकाशन आपके लम्बे विचार मंथन का ही परिणाम थी। हंस के प्रकाशन का प्रारम्भ ही स्वाधीनता आंदोलनों के लिए जनमत निर्माण के उद्देश्य से हुई थी। हंस को ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। जैनेन्द्र को लिखे पत्र में आपने कहा : "हंस पर जमानत लगी। मैंने समझा था आर्डिनेंस के साथ जमानत भी समाप्त हो जाएगी, पर नया आर्डिनेंस आ गया और जमानत भी बहाल कर दी गयी। जून और जुलाई का अंक हमने शुरू कर दिया है, पर जब मैनेजर साहब अपना नया डिक्लरेशन देने गये तो मजिस्ट्रेट ने पत्र जारी करने की आज्ञा न दी जमानत मांगी। अब मैंने गवर्मेंट को स्टेटमेंट लिखकर भेजा है, अगर जमानत उठ गयी तो पत्रिका तुरंत ही निकल जाएगी। छाप (कट) सिलकर तैयार रखी है, अगर आज्ञा न दी तो समस्या टेढ़ी हो जाएगी। मेरे पास न रुपया है न प्रोमेसरी नोट न सिक्योरिटी। किसी से कर्ज लेना नहीं चाहता। यह शुरू साल है चार–पांच सौ वी.पी. जाते कुछ रूपये हाथ आते, लेकिन वह नहीं होना है।"

स्वाधीनता आन्दोलन में हंस एक वैचारिक पत्रिका के रूप में स्थापित हुई। हंस के नियमित प्रकाशन के लिए बहुत जद्दोजहद करने पड़ते थे। इस समय हंस हिंदी साहित्य परिषद की देख रेख में निकलता था। परिषद् ने जमानत के बदले हंस का प्रकाशन ही बंद करना उचित समझा। प्रेमचन्द को यह नागवार गुजरा और उन्होंने खुद का स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी जमानत का प्रबंध कराया और पत्र को अनवरत प्रकाशित करते रहे।

पत्रकार प्रेमचन्द की दृष्टि मानवीय संवेदनाओं से भरी थी। एक साहसिक पत्रकारिता का परिचय देते हुए अपने क्षेत्रवाद, विचारवाद, व्यक्तिवाद आदि का भी विरोध किया, जो तत्कालीन समाज में हर ओर छाए हुए थे। उनके आगे प्रेमचन्द कभी झुके नहीं और अपनी पत्रकारिता को रचना और विचार की पत्रकारिता, राष्ट्रीय आन्दोलन की पत्रकारिता दीन–दलितों के समर्थन की पत्रकारिता बनाये रखा। प्रेमचन्द जी ने हंस के साथ–साथ माधुरी और जागरण का भी सम्पादन किया और राष्ट्रीय चेतना सम्बन्धी अपने विचारों द्वारा देशवासियों को सामाजिक असमानता, शोषण और ब्रिटिश हुकूमत से मुक्ति के लिए जागृत किया। अपने प्रथम सम्पादकीय की घोषणा के अनुसार उन्होंने हंस को राष्ट्र की अस्मिता और राष्ट्रीय आन्दोलन का मुखपत्र बनाये रखा। आपकी सम्पादकीय टिप्पणी प्रखर राष्ट्रीय चेतना से भरी रहती थीं। इस कारण आपको बार–बार तत्कालीन शासन के कठोर नियमो की वजह से परेशानियों का सामना करना पड़ा।

प्रेमचंद की पत्रकारिता में पूर्वाग्रह का कोई स्थान नहीं था। आपने हंस में विरोधी विचारधारा के व्यक्तियों को भी बराबर स्थान दिया, पत्रकारिता के क्षेत्र में यह स्वभाव विरले ही लोगो का होता है। हिन्दू मुस्लिम एकता पर भी आपने अपने सम्पादकीय में लेखनी चलाई है। आपका विचार था "पराधीन भारत में न हिन्दू की खैर है, न मुस्लिम की।" हंस में आपके सम्पादकीय का शीर्षक था "हंसवाणी"। इन सम्पादकीय में प्रेमचन्द की खरी–खरी बातें, निर्भीकता, ओजस्विता और राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति हुआ करती थी।

हंस अपनी इन्ही विशेषताओ के कारण अपने प्रकाशन के पांच वर्ष के भीतर राष्ट्रीय पत्रिका के रूप में अपनी विशेष पहचान बना ली। भारतीय जन मानस हंसवाणी पढने के लिए उत्सुक रहा करती थी।

एक पत्रकार के रूप में जिन विशेषताओं का होना आवश्यक होता है, प्रेमचंद ठीक वैसे ही पत्रकार थे। आपके सम्पादकीय में आलोचना, मुखर वार्ता, विरोध, आह्वान, सुझाव, समर्थन सभी का समावेश समय और परिस्थिति के अनुसार होता था। समाज के हित के कार्यों को सराहना और गलत बातों और गलत कार्यशैली की आलोचना भी वे खुल कर करते थे। आपकी पत्रकारिता भी आपके कथा साहित्य की तरह सशक्त थी। समाचार पत्र में भाषा का उपयोग आप बड़ी कुशलता से करते थे। कथन की स्पष्टता, भाषा की सरलता, संप्रेषणीयता इतनी सशक्त होनी चाहिए की कोई आसानी से छोटे से छोटे समाचार की उपेक्षा न कर पाए।

निष्कर्ष

प्रेमचन्द ने पत्रकारिता को एक जीवन ध्येय बनाकर जिया है, किसी व्यवसाय के रूप में नहीं अपनाया है। आप सदैव पत्रकारिता में पूंजी के प्रभुत्त्व के खिलाफ थे। आप पत्रकारिता के बुनियादी सिधांतों के पक्षधर थे, कभी भी सत्ता या धन के सामने घुटने नहीं टेके। प्रेमचन्द के हंस ने दुनिया रूपी सरोवर में जनमानस को सत्य के लिए बोलना सिखाया। आपका साहित्यकार रूप जितना विराट और भावों को समेटे है, पत्रकार के रूप में भी आपका कर्म उतना ही उच्च है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, रतन कुमारी, *''स्वाधीनता संग्राम में मुंशी प्रेमचन्द का योगदान,''* साहित्य– भारती, जुलाई सितम्बर 2002, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ।
2. *प्रेमचन्द कहानीकार ही नहीं पत्रकार भी,* लाइव हिन्दुस्तान डॉट कॉम 29 जुलाई 2009।
3. नारायण, विनीत, *प्रेमचन्द की पत्रकारिता के सरोकार,* लेख, अमर उजाला डॉट कॉम 30 जुलाई 2012।

****